Story-description of Dharamveer Bharti's novel: Gunanon Ka Devta

(धर्मवीर भारती के उपन्यास "गुनाहों का देवता "का कथा–वस्तु विवेचन)

Anita singh*; Dr. Abhay Shankar Dwivedi**
Research Scholar; Research Supervisor,
Department of Hindi, Career Point University, Kota Rajasthan
Corresponding Author: anita.s.chauhan143@gmail.com

DOI: 10.52984/ijomrc2113

सार

प्रस्तुत शोध पत्र में धर्मवीर भारती के उपन्यास गुनाहो के देवता का कथा वास्तु विश्लेषण किया गया है। गुनाहों का देवता" रूमानी भाव –भूमि पर आधारित उपन्यास है I इस उपन्यास में चंदर और सुधा के युवा मन की कोमल अनुभूतियाँ ,भावुकता तथा आदर्शवादी प्रेम है ,तो दूसरी ओर खंड –खंड होती नैतिकता और तिरोहित होते सपनों की पीड़ा भी है, यह उपन्यास अपने समय में बहुत ही लोकप्रिय रहा I इसकी लोकप्रियता का कारण जादुई रोमांस के साथ कहानी का सरल ताने –बाने में बुना होना है।

शब्द-संकेत: रूमानी, युवा, कोमल-अनुभूतियाँ ,भावुकता प्रेम

भूमिका

धर्मवीर भारती जी का पहला उपन्यास "गुनाहों का देवता "सन् 1949 में प्रकाशित हुआ था I यह कथा तीन खंडों में विभाजित है I प्रथम खंड में सुधा की विदाई है ,दूसरे खंड में पम्मी तथा चंदर का रोमांस से युक्त प्रेम प्रसंग है तथा तीसरे खंड में सुधा की मृत्यु के साथ उपन्यास की समाप्ती हो जाती है I कुल तीन सौ इक्यावन पृष्ठों में इस उपन्यासकी परिसमाप्ति हुई है I यह एक प्रेम कथा वाला उपन्यास है ,जिसमें हमें कल्पना भावुकता के ताने –बाने का सुंदर समन्वय चित्रण मिलता है I उपन्यास में एक ही पुरुष पात्र (चंदर)है ,जिसका तीन तीन नारियों से संबंध रहा I कहानी इन्हीं पात्रों के इर्द-गिर्द रची गई है I उपन्यास वर्णनात्मक काल्पनिक गद्य कथा है।

मूल कथा की रचना में लेखक सजग है उसमें चुस्ती है तथा मस्ती का पुट भी है I शिल्प नाटकीय होते हुए भी एक अलग ही स्थान रखता है I यौन भावों का विस्मृत चित्रण अधिकांश पात्रों में झलकता है। 'गुनाहों का देवता' मध्यमवर्गीय जीवन की यथार्थता, मूल्य–संकट, पारिवारिक संत्रास, मानसिक ऊहापोह इत्यादि का दिग्दर्शन कराता है तो वही दूसरी ओर 'सूरज का सातवां घोड़ा'

नवीन शैली में नए धरातल की सूचना देता है। दोनों ही उपन्यासों में अनेक प्रयोगात्मक स्थितियों का बोध होता है। दोनों ही रचनाओं में भारती जी का काव्य पक्ष (भावुक व्यक्तित्व) सर्वत्र विद्यमान दिखाई देता है।[i]

कथा-वस्तु का विवेचन

गुनाहों का देवता सन् 1949 ई. में लिखा गया भारती जी पहला उपन्यास है जो मनुष्य के सहज और सरल प्रेम की पराकाष्ठा को प्रस्तुत करता है। 'गुनाहों का देवता' नयी पीढ़ी के पाठकों का विशेषकर किशोरवय पाठकों का इतना प्रिय बन सका क्योंकि इसमें अपेक्षाकृत जिन उलझी हुई संवेदनाओं का चित्रण हुआ है वह मूलतः मानवीय है। 'गुनाहों का देवता' कथाकृति के रूप में अप्रौढ़ होने के बावजूद भी लोगों के द्वारा सबसे ज्यादा पढ़ी गई प्रियतर आख्यान है।[ii]

उपन्यास की नायिका है सुधा और नायक है चन्दर। सुधा दूज के चाँद सी मासूम, हिरनी की भोली आँखों – सी निष्पाप युवती है। उसकी कुँआरी

सांसो का देवता है – चंदर (चन्द्र कुमार कपूर) जो प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी का विद्यार्थी रहा है और अब रिसर्च स्कॉलर है। चन्दर के ऊपर उसके सिनियर टीचर डॉक्टर शुक्ला का बड़ा स्नेह है और वह उनके परिवार का सदस्य सा हो गया है। डॉक्टर शुक्ला की एक मात्र कन्या सुधा आठवीं से ही चन्दर के स्नेह – शासन में रही और अनायास ही उसके अनुराग के रंग में रंग गयी है। चन्दर के साथ हँसते-खेलते , लडते – झगड़ते, रीझते चन्दरमय हो उठी है। चन्दर भी सुधा को बहुत प्यार करता है। वह डॉक्टर शुक्ला तथा सुधा के निश्छल विश्वास और सहज स्नेह से एक गौरव का अनुभव करता हुआ अपने प्रेम को बहुत ऊँचाई पर रखता है। जाति व्यवस्था, कुल मर्यादा,, विवाह संबंध आदि के विषय में डॉक्टर साहब के विश्वास पुराने है। चन्दर के निबंध को टाइप कराने के लिए शुक्ला जी पम्मी के पास भेजते हैं। जहाँ उसकी मुलाकात पम्मी के पागल भाई बंटी के साथ होती है। पम्मी दिखने में बहुत सुन्दर है, चन्दर उसे देखने के बाद सोचने लगता है कि यह लड़की जो व्यवहार में इतनी सरल और स्पष्ट है, फैशन में नाजुक और शौकीन है, काम करने में उतनी ही ज्यादा मेहनती और तेज भी है। सुधा की बी. ए. की पढ़ाई खत्म होते – होते उसके विवाह की बातें होने लगती है, तब उसकी बुआ की बेटी बिनती घर में आती है। शादी के लिए लड़के की फोटो लाई जाती है, लड़के का नाम है कामरेड कैलाश मिश्र। चन्दर के दिमाग में बरेली की बातें, लाठी चार्ज सभी कुछ घूम गया। चन्दर के मन में इस वक़्त जाने कैसा लग रहा था। कभी बड़ा अचरज होता कभी संतोष होता कि चलो सुधा के भाग्य की रेखा उसे अच्छी जगह ले गई, फिर कभी सोचता कि मिश्र इतने विचित्र स्वभाव का है, सुधा की उससे निभेगी या नहीं? फिर सोचता, नहीं सुधा भाग्यवान है। इतना अच्छा लड़का मिलना मुश्किल था। बिनती उत्सुकता से पूछती है कि 'आप इन्हें जानते हैं?'

'हाँ, बिनती। पलकों में आए आँसू को रोककर और होठों पर मुस्कान लाने की कोशिश करते हुए बोला-'मैं सोच रहा हूँ, कि आज कितना संतोष है मुझे, कितनी खुशी है, मुझे कि सुधा एक ऐसे घर जा रही है जो इतना अच्छा है जो इतना ऊँचा '………….. कहते – कहते चन्दर की आँखें भर आयीं।'

जब सुधा को लड़के का फोटो चन्दर दिखलाता है तब सुधा कहती हैं कि तुम्हारी जुबान न हिली कैसे? शरम न आयी तुम्हें? हम कितना मानते थे पापा को, कितना मानते थे तुम्हें! हमें यह नहीं मालूम था कि आप लोग ऐसा करेंगे। तब चन्दर का हाथ तैश में उठा और एक भरपूर तमाचा सुधा के गाल पर प़डा। सुधा के गाल पर नीली उँगलियां उभर आयीं। वह स्तब्ध! जैसे पत्थर बन गयी हो।[iii]चन्दर ने सुधा का सिर उठाया और कहा – सुधा हमारी तरफ देखो – सुधा ने सिर ऊपर उठाया। चन्दर बोला हम दोनों एक दूसरे की जिंदगी में क्या इसीलिए आए हैं कि एक दूसरे को कमजोर बना दें या फिर हम लोगों ने स्वर्ग की ऊँचाईयों पर साथ बैठकर आत्मा का संगीत सुना सिर्फ इसलिए कि अपने ब्याह की शहनाई में बदल दें।

सोने की पहचान आग में होती है न ! लपटों में अगर उसमें निखार न आए तो वह सच्चा सोना नही है। हमारा प्यार यदि कठिनाइयों से, वेदनाओं से, संघर्षों से खेले और विजयी हो जाये तभी मालूम होगा कि सचमुच मैंने तुम्हारे जीवन में प्रकाश और बल दिया था। अगर तुम सदा मेरी बाहों की सीमा में रहीं और मै तुम्हारी पलकों की छांव में रहा और बाहर के संघर्षों से डरते रहें तो कायरता है। जो मुझे अच्छा नहीं लगेगा कि दुनिया मेरी सुधा को कायर कहें, बोलो क्या तुम कायर कहलाना पसंद करोगी?[iv]"

सुधा को चन्दर समझाता है कि अपना ख्याल रखें तो सुधा यह कहती हैं कि मैं तो दो – चार दिन में ठीक हो जाऊँगी! तुम घबराओं मत ।मैं मृत्यु-शय्या पर भी होऊँगी तब भी तुम्हारे आदेश पर हँस सकती हूँ।

शादी के समय सुधा शांत एवं चुप दिखाई देती है। यंत्रवत सारी रस्में निभाती रहीं किन्तु बिदाई के समय सुधा चन्दर के पैरों में फूल चढ़ाकर एक

पुड़िया खोलकर इसमें से थोड़ा सा सिंदूर उन फ़ूलों पर छिड़ककर, चन्दर के पाँवों पर सिर रख कर चुपचाप रोती रही। थोड़ी देर के बाद उठी और उन फ़ूलों को समेटकर अपने आँचल के छोर पर बाँध लिया। डाक्टर साहब, बिनती और बुआ तीनों बिनती के विवाह के लिए गाँव चले जाते हैं इधर चंदर पम्मी के साथ घूमने फिरने में समय बिताने लगता है। कुछ दिनों के बाद शुक्ला जी के लौटने के बाद पता चला कि बिनती का ब्याह टूट गया। क्योंकि लड़के वालों ने झूठ बोला कि लड़का ग्रेजुएट है लेकिन लड़का इंटर फेल था, उसके बायें हाथ की अंगुलियाँ गायब है।, डॉक्टर साहब बिगड़ गए, और बिनती को मड़वे से उठवा दिया। फिर लड़ाई झगड़े के बाद किसी तरह से तीन फेरों के बाद बिनती का विवाह टूट जाता है।

अब बिनती गुमसुम सी चुपचाप रहने लगी शुक्ला जी बिनती को अपने साथ दिल्ली ले जाने की बात सोचने लगते हैं। बिनती की उदासी देखकर चंदर उससे कहता है मैं कितना व्यथित हूँ बिनती! अगर तुमको भूल से कुछ कह दिया हो तो तुम उसका इतना बुरा मान गईं कि दो – तीन महीने में भी नहीं भूलीं। बिनती बोली इसमें बुरा मानने की क्या बात है। बिनती फीकी हँसी हँस कर बोली – 'आखिर नारी का भी एक स्वाभिमान होता है, मुझे माँ बचपन से कुचलती रहीं, मैंने दीदी से बढ़कर तुम्हें माना। तुम भी ठोकरें मारने से बाज नहीं आए। दुनियां मुझे केवल कुचलती ही रहीं हैं।

जिस दिन सुधा को सुबह आना था, उस रात को चंदर का मन बिल्कुल बेकाबू – सा हो रहा था। लगता था कि मन कुछ भी सोचने – समझने को तैयार ही नहीं हो। चन्दर उस दिन एक भी पल अकेला न रहकर भीड़ – भाड़ में खो जाना चाहता था।

सुधा जब घर पहुँचती है तो चन्दर सुधा को देखता है कि सुधा उजड़ चुकी थी। उसका रस मर चुका था वह केवल अपने रूप, यौवन चंचलता और मिठास की एक जर्द छाया मात्र रह गयी थी। उसके चेहरे की खुशी और रौनक जैसे कहीं खो गई हो I

कैलास भी सुधा से प्रेम करता था लेकिन जब मन का मेल न हो तो तन के मिलने न मिलने का कोई फर्क नही पड़ता है I कैलास को भी सुधा की फिक्र थी I घर में जब कैलाश सुधा से पूछता है " तुम्हें क्या हो गया है सुधा? "सुधा कहती थी - 'मुझे सुख रोग हो गया है। ' सुधा एक क्षीण सी हँसी हँस कर कहती – 'बहुत सुख में रहने से ऐसा ही हो जाता है। 'कैलाश सुधा को छोड़ कर पार्टी के काम से चला जाता है। कैलास पार्टी का एक सशक्त कार्यकर्ता भी है I पार्टी के कई महत्वपूर्ण कार्यों को अंजाम देने के लिए उसको अक्सर बाहर जाना पड़ता है I

सुधा अक्सर बीमार रहने लगी थी ,सुधा की तबियत ज्यादा खराब होने के कारण कैलाश उसे दिल्ली छोड़ आता है I चन्दर को भी दिल्ली बुलाया जाता है। पहुँचने पर डाक्टर साहब से चन्दर पूछता है " क्या हुआ सुधा को? "चन्दर ने बहुत ही व्याकुलता और कातरता के स्वर में पूछा। वे कुछ नहीं बोले। चुपचाप चन्दर के कंधे पर हाथ रखते हुए अन्दर आए और भारी स्वर में कहा – "हमारी बिटिया गई चंदर !" और आँसू छलक आए। सुधा की हालत देख कर चंदर अंदर से टूट जाता है और खुद को उसकी इस हालत का जिम्मेदार मान बैठता है I उससे सुधा की पीड़ा देखी नहीं जाती है, लेकिन वह बेबस और लाचार है कुछ नही कर सकता थाI शायद अब बहुत देर हो चुकी थी I

सुधा चन्दर को बिनती से विवाह के लिए राजी करने लगती है। सहसा उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा जाता है – " भागों, चन्दर! तुम्हारे पीछे कौन खड़ा है? "चन्दर घबराकर खड़ा हो जाता है – पीछे कोई भी नहीं था……. सुधा चीख रही थी सभी लोग पास आकर खड़े हो जाते हैं। सुधा का सिर चन्दर की गोद में लुढ़क गया – बिनती को नर्स ने सम्भाला और डाक्टर शुक्ला सर्जन के बँगले की ओर दौड़े………… घड़ी ने टन टन करके दो बजाये…………

समीक्षा –

" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ' गुनाहों का देवता ' प्रेम का नया समाजशास्त्र है। इस शास्त्र का रूप घोर आक्रामक हैं जिसने परम्परागत विवाह - व्यवस्था पर करारी चोट की है। उपन्यास के आरम्भ में ही मिस डिक्रीज ने एक मार्मिक बात कही थी – 'शादी अपने को दिया जाने वाला सबसे बड़ा धोखा है। 'ऐसे धोखे की ओर कच्ची आयु के भोले – भाले भावुक नादान प्रेमी वासनारहित प्रेम के लिए पूरे उल्लास के साथ बढ़ते तो हैं, परंतु एक सीमा पर पहुँच कर जो चतुर्दिक विद्रोह – विस्फोट होता है, वही यथार्थ का केन्द्रीय मर्म होता है। " [v]

भारती जी ने सहज और वास्तविक रूप में प्रेम को दर्शाया है I जो वास्तव में हर एक किशोर की जीवन में आई एक लहर की तरह है ,कोई उन लहरों में तैर कर पार लग जाता है, तो कोई डूब जाता है,कोई केवल किनारे पर बैठ कर अपने अधूरे ख्वाब का मातम मनाता है। प्रेम हर किसी के जीवन में जरूर दस्तक देता है I ऐसा लगता है जैसे चंदर को स्वयं भारती जी ने जिया और भोगा है I

हम कह सकते हैं कि 'गुनाहों का देवता 'प्रेम के एक सहज मानवीय रूप को प्रस्तुत कराता है जिसका समुचित वर्गीकरण हिन्दी के रीतिशास्त्र में नहीं हुआ है। साथ ही नयी संवेदनाओं का जो चित्रण हुआ है, वह मूलतः मानवीय है। [vi] "गुनाहों का देवता " एक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी सामाजिक उपन्यास है। जिसमें भारती जी ने मध्यमवर्गीय समाज में व्याप्त समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने के लिए अलग - अलग पात्रों के माध्यम से कहानी को सुन्दर एवं मनोरम ढंग से निरूपित किया है। उपन्यास के सभी पात्र मध्यम वर्ग से ही संबंधित है तथा संबंधों को अपने – अपने ढंग से बनाए हुए हैं। चंदर (चंद्र कुमार कपूर) का तथा सुधा का पारस्परिक संबंध उपन्यास के शुरू से लेकर अंत तक बना रहता है। लेखक ने पुरुष और नारी के पारस्परिक बाह्य संबन्धों के साथ ही उनके अंतस संबन्धों को भी उजागर करने का प्रयास किया है। पुरुष – स्वभाव की विभिन्नता पर कम और नारी – स्वभाव की विविधता ही इस उपन्यास की उपलब्धि कही जा सकती है।[vii]

"गुनाहों का देवता "में प्रेम और विवाह संबंधी वैयक्तिक कथा – संहिता प्राचीन और आधुनिक जीवन तथा भारतीय और विदेशी धारणाओं को अपने में समेटती सी नजर आती है। इसमें पम्मी के माध्यम से पश्चिम का प्रेम चित्रित किया गया है, जिसमें सुविचारित अवलोकन, तार्किकता और औपचारिकता है। इसके विपरीत सुधा के प्रेम में भारतीयता का बिम्ब दिखाई देता है, जिसमें प्रेम किया नहीं जाता है बल्कि वह खुद ही अनायास ही विकसित हो जाता है। प्रेम एक सच्ची अनुभूति है , यह विकार और वासना से रहित होता है। पम्मी की मुखर वासना का विरोध वास्तव में गहरी स्वीकृति है। इधर सुधा के मौन प्रेम में वासना का कोई भी अस्तित्व नहीं है। सेक्स प्रेम और विवाह के संबंध में पम्मी के साथ चन्दर के साथ जो कुछ भी बात – चीत है उससे आधुनिक नारी का दृष्टिकोण प्रस्तुत होता है। प्रेम की चाहें जितनी भी व्याख्याएं हो, लगता है जैसे कि वह हर प्रकार से विवाह का तीव्र विरोध ही हो जाता है। चन्दर अवसर होने पर भी अपनी कोई टिप्पणी नहीं करता है लेकिन अपने अन्दर की पीड़ा से संघर्ष अवश्य करता रहता है हैं। वह पहली बार मर्माहत होकर कहता है – प्रेम में एक न हो पाने की पीड़ा तो है लेकिन कुंठा नहीं है। यह आदर्शवादी प्रेम है। इस उपन्यास ने बीसवीं सदी के हमारे मध्यमवर्गीय समाज की रूढ़िगत नैतिक व्यवस्था पर एवं कुरीतियों पर दृष्टिपात किया है। आज की युवा पीढ़ी पंगु एवं कायर है। दिशाहीन है और निर्णय लेने में असमर्थ है। यही समर्थता ही उसके जीवन में अनेक विसंगतियाँ पैदा करती है, जिसका उदाहरण सुधा और चंदर है। इस प्रकार भारती जी का यह उपन्यास युवा मानसिकता को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित करता है। हमारे सामाजिक बंधन हमको अपने मन के भावों को मुखरित करने की इजाजत नहीं देते है I लेकिन कहीं न कहीं वह प्रेम हमारे परिवार द्वारा बांधे गए विवाह बंधन को प्रभावित जरूर करता है क्योंकि प्रेम एक सात्विक अनुभूति है I जो मन के किसी कोने में अदृश्य रूप

से हमेशा विराजमान होती है ,हम प्रेम को दफन जरूर करने की कोशिश करते है लेकिन वह न मिटने वाली एक पवित्र अनुभूति होती है ,जिसका शरीर से संबंध न होकर हमारी आत्मा से होता है I जो विवाह के रिश्ते को भी प्रभावित किए बिना नहीं रहता है I

संदर्भ:

[i] कंचन बाला रामटेके,धर्मवीर भारती के कथा – साहित्य का अनुशीलन

[ii] भारती पुष्पा ,धर्मवीर भारती की साहित्य-साधना ,पृ ० सं० 40 पैरा ० 2

[iii] धर्मवीर भारती ,गुनाहों का देवता पृ ० सं० 100 पैरा ०

[iv] धर्मवीर भारती ,गुनाहों का देवता पृ ० सं० 101 पैरा ० ३

[v] भारती पुष्पा ,धर्मवीर भारती की साहित्य – साधना ,नई दिल्ली ,पृ ० सं० 195 पैरा ०.

[vi] चतुर्वेदी रामस्वरुप ,समकालीन हिन्दी साहित्य – विविध परिदृश्य ,पृ० सं० 89 पैरा ० 2

[vii] राजपाल हुकुमचंद ,धर्मवीर भारती साहित्य के विविध आयाम , पृ० सं० 134 पैरा ० 2